डॉ० संगीता राय
संस्कृत विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज, आरा

मेघदूत में मेघमार्ग का वर्णन :-

विरहविधुर एवं कान्तविश्लेषित यक्ष रामगिरि पर्वत पर अपने शाप की अवधि व्यतीत कर रहा है। आठ मास के लगभग व्यतीत हो चुके हैं तथा चार मास अभी भी शेष है वह आषाढ़ मास के मेघ को देखकर व्याकुल होता हुआ अपनी पत्नी को सन्देश देने के लिए मार्ग का निर्देश करता है। यक्ष कहता है - हे मेघ! तुम उस रामगिरि नामक स्थान से जो कि सरस वेतस वृक्षों एवं राजहंसो से परिपूर्ण है, उत्तर की ओर चलकर सर्वप्रथम मालक्षेत्र पर पहुँचना

"अद्रेः शृङ्गं हरति पवनः किंस्विदित्युन्मुखीभि,
दृष्टोत्साहश्चकितचकितं मुग्धसिद्धाङ्गनाभिः ।।
स्थानादस्मात्सरसनिचुलादुत्पतोदङ्मुखः खं,
दिङ्नागानां पथि परिहरन् स्थूल हस्तावलेपान् ।।

वहाँ से कुछ पश्चिम की ओर मुड़कर हल्की वर्षा करके उत्तर की मुड़ना - "किंचिद् पश्चात् व्रज लघुगतिर्भूय एवोत्तरेण।" इसके आगे तुम्हे आम्रकूट पर्वत मिलेगा जिस पर तुम विश्राम कर सकते हो

"वक्ष्यत्यध्व श्रम परिगतं सानुमानाम्रकूटः"।
इससे आगे बढ़कर आपको विन्ध्याचल के ~~पाद~~ प्रान्त भाग में प्रवाहित नर्मदा दिखाई देगी —

"रेवां द्रक्ष्यस्युपलविषमे विन्ध्यपादे विशीर्णाम्।"

आगे जाने पर तुम्हें दशार्ण देश मिलेगा, जहाँ की राजधानी विदिशा है —

" तेषां दिक्षु प्रथितविदिशा लक्षणां राजधानीम् ।"

वहाँ की वेतवा नदी का जलपान करते हुए विन्ध्याचल एवं नीचैः गिरि पर विश्राम करना —

" नीचैराख्यं गिरिमधिवसेस्तत्र विश्रामहेतोः ।

इसके पश्चात् उत्तर की ओर मुड़कर चलने में मार्ग यद्यपि आपका कुछ ~~टेढ़ा~~ टेढ़ा हो जायेगा, किन्तु फिर भी तुम्हें उज्जयिनी नगरी अवश्य जाना है —

" वक्रः पन्थाः यदपि भवतः प्रस्थितस्योत्तराशां, सौधोत्सङ्ग प्रणयविमुखो मा स्म भूरुज्जयिन्याः ।"

इस उज्जयिनी मार्ग में ही तुम्हें निर्विन्ध्या और सिन्धु नदी का दर्शन होगा। इनसे आगे वैभव सम्पन्न उज्जयिनी में जाकर महाकाल शङ्कर की आरती में सम्मिलित होना। वहाँ पर रात्रिभर विश्राम कर शिप्रा नदी की प्रातः कालीन वायु से प्रेरित होकर गम्भीरा नदी होते हुए देवगिरि पर्वत पर पहुँचना। उस देवगिरि पर्वत पर भगवान् कार्तिकेय पर हल्की पुष्पवर्षा करना। इसके आगे चर्मण्वती को पार करते हुए ~~3~~ तथा दशपुर की स्त्रियों के नेत्रों के कौतूहल का विषय बनते हुए, ब्रह्मावर्त को अपनी छाया से ढकते हुए कुरुक्षेत्र पर पहुँचना —

" ब्रह्मावर्तं जनपदं छायया गाहमानः क्षेत्रं क्षत्रप्रधनपिशुनं कौरवं तद् भजेथाः।

वहाँ पर सरस्वती नदी का जलपान करके

अपने को पवित्र करते हुए कनखल होते हुए, आपको गङ्गा पर पहुँचना है —

" तस्माद् गच्छेरनुकनखलं शैलराजावतीर्णां, जन्हो: कन्यां सगर तनयस्वर्गसोपानपंक्तिम् "

वहाँ से आगे बढ़ने पर आपको हिमालय के दर्शन होंगे। वहाँ भगवान् शङ्कर के चरण-चिह्नों की परिक्रमा करनी है तथा वर्षा के द्वारा वहाँ की वनाग्नि को शान्त करना है। पुनश्च इसके आगे परशुराम की कीर्तिभूत क्रौञ्चदर्रै से तिरछे निकलकर कैलाश पर्वत पर पहुँचना

" गत्वा चोर्ध्वं दशमुखभुजोच्छ्वासित प्रस्थ सन्धे:, कैलासस्य त्रिदशवनितादर्पण स्यतिथि: स्या: ।

यहाँ पर तुम देवांगनाओं के धारागृह बनकर रहना और वहीं से कैलास की गोद में बसी अलका दिखायी देगी। यही आपका गन्तव्य स्थान है —

" तस्योत्संगे प्रणयिन इव स्रंतगङ्गा: दुकूलम् ।

—x—